

१५०

उग्रतारादेवीपूजा

ASHA ARCHIVES

3185

१७ सुत्रानाममहा ॥ पुं नमः श्रीदुर्गाय ॥ नत्वा युवगा ॥ नं नाविपीरुव ता
विपी ॥ श्रीगंकवमरं कृत्वा वन्निशी यरु नकमं ॥ श्रीनाथादि ॥ पुं वक्रादक
कुरुट्स्वाहा ॥ ॐ किरुलमनु ॥ कलमधिरुय ॥ न कुरुलं सर्वमनु मयं ॥ त्वा
युक्तार्थं निधाय किंचिद न्यरुल निःक्रिया न नैव वा विना ॥ ॐ कौ स्वाहा ॥ ॐ कि
यादीयदात् ॥ ॐ कौ विगुद्ध धर्म गाय कि सर्वया या निगमया ॥ गव विकल्पा
नयनय २ कुरुट्स्वाहा ॐ कौ स्वाहा ॥ आचम्य ॥ नरुयी ० विरुथ ॥ गम गानं
नरुमं विरु नरु कल्पादुमं सभ ॥ न नूलमगियी ० ॐ नानामगि विरु वि

नं ॥ नानालंकावरुयाद्यं मुनिदवै श्रुविर्न ॥ गिवा रिर्वदु मां सास्त्रि भादम
नारि वरुग १ वरु दिरुग वामु विगांग ॥ न विरु विगाध न न ॥ ॐ स्वावथद्वी
य ॥ ॐ कथा नथा ग १ ॥ ॐ किथा त्वा ॥ ॐ म वि ध विवदि गि सर्ववर्गं क वि
स्वाहा ॥ ॐ किगि स्वावधनं ॥ ॐ वरु २ कुरुट्स्वाहा ॥ ॐ किरुलारिष कादु मि
॥ ॐ धय ॥ ॐ सर्व विद्या न सा वय कुरुट्स्वाहा ॥ ॐ कि ना वा वमद या कुरु य
कया वि वि विद्या न सा वय ॥ ॐ य वि वरु कुरुम कुरुट्स्वाहा ॥ ॐ मि म
रि म ॥ ॐ आ १ स वरु वरु वरु कुरुट्स्वाहा ॥ ॐ कि मनु ॥ ॐ रुमी म पु लं वि

[illegible]

मनुज ११

५२

[illegible]

एकवर्षं नारो ध्यात्वा गदगुगामिनास्व कंददं दं विविच्य
 वषं ददिविचिच्य गदगुगं नवीयुना रुसयो सा यो ॥ गना दू
 वसिविचिच्य गदगुगामृगनगदस्ति द्याविर्गं कृत्वा मंगाने
 कृत्वा समस्त गवीववृवं विष्णुमयि द्यावथ ॥ गन नानामय गन
 यथ ॥ लंदवनाय किर्म ध्याय ॥ यथा गस्मिन्नम गानवृथ विष्णु द्यायका
 मृगं वा विधि ॥ आ ४ कानाडक यद्वा ध्यात्वा गदयवि टां कानावृ कयद्वा विवि
 च्य गदयवि डं कानं नील सन्निरुंध्यात्वा दू कानवीड रुयिर्गं कंद कां ध्यात्वा
 गस्थाय विपुनर्धाय दान्मानं नाविनी मयं ॥ गनारुगवर्गी ध्याय ॥ यथा लीट

६ वाक् यालियाद वायु उयम् गवस्यर्ग रयवस गन्ध आकाश
वायुर्गज गविचपृथ्वी नृवं सोऽग्निवर्गं न वचदहं ॥ १ ॥ धया
मिस्वाहा ॥ ३ ॥ श्री उज्ज ॥ अं १५ कं ३५ निवेगकि सदागि वं श्वर
शुद्धविद्या माया कला अविद्या वागकाचनति यन्मेषपृथ्वी अहं
काच मनोवृद्धि ॥ ५ ॥ उ वक चकृ जिह्वा ह्रास् वाक् यालिया
द वायु उयम् गवस्यर्ग रयवस गन्ध आकाश वायुर्गज ग
विच पृथ्वी नृवं सोऽग्निवर्गं न वचदहं ॥ १ ॥ धया मिस्वाहा ॥ ३ ॥

१ आदकं ॥ उं ऊं श्रीं उं कं ५ आत्मनृवं यथा रुवनि स्मृता स्मृत दहं सा
धयामि स्वाहा ॥ १ ॥ मत्स्य ॥ उं ३ ऊं हं ५ विद्यानृवं यथा रुवनि गथा शु
षादहं साधयामि स्वाहा ॥ २ ॥ उद्दि ॥ उं ३ सोऽहं ५ निवर्गं यथा रु
वनि गथा यवदहं साधयामि स्वाहा ॥ ३ ॥ श्री उज्ज ॥ अं ३ उं १ कं १५ स
र्वनृवं यथा रुवनि स्मृता जीवसाधयामि स्वाहा ॥ ४ ॥ साधन ॥ ॥

१ धा उर्द्वक ना नास्य मयसां गसदायिय वलिगृह महादवि पशुचक्र स
मस्तु ॥ चक्रवर्ति ॥

१ वा नृ ॥ अहं मग्नो अनिवलिसहिर्न कागया उदय ॥ दत्तास्त्रन्द मूर्ति सक
लकल उचैर्न वदंती कर्मिणी ॥ कणाय उदान ॥

१ गार्हवक्रासनादवीं किं नु मस्तु क सं यूगां गदाधिवयवाताम दद
 वक्रवयवां। काटिसूर्यसमं नड सुफकाशनसं निरु। नानावत्ता
 दिसंयुकां नानाउवराहयिता। वक्राध्यादिगलाधीनं केववेऽम्ह
 संयुता। कृपायद्वेयपी० श्री गार्हवन्तस्यसीरिता। जेलायुयायिनी
 दवी विगक्रामकनूयिणी। सर्वसिद्धिगलाधीनं सर्वदवेर्नमस्तु
 तां। सर्वानन्दमयीं दवीं सर्वलक्षणसंयुतां। आऊनाऊनवीदवी
 गत्वस्तं सर्वसिद्धियां॥ वंगुयाध्यान॥ **विन्दवदवाग्वादिनिस्साहा**
उतमः॥ श्रीगणेशाय नमः॥ इत्यादि नरैर्वदवदवाग्वादिनिस्साहा॥

१ तर्पणां॥ ऐं ह्रीं श्रीं आदयो मीशिव
 शक्ति सदाशिवः॥ ईश्वरः भुव विद्यावतनं प्रथमे भवेत्॥ आहुकेन आत्म त्वेशो वानु
 यामि॥ ॥ ऐं ह्रीं श्रीं कादिमाता मायावयावकला पुनः॥ अविमातगकारणं पुरुष त
 त्वसीरितं॥ मत्प्रेनवि प्रतत्वेन सूक्ष्म देह शोधयामि॥ ॥ ऐं ह्रीं श्रीं यादिसाक्षाः प्रर
 तिच्छाया हं हतिः॥ मनोबुद्धि क्रान्ति ताव वसुजिह्वा नसीवचः॥ पाणि पाद पा
 दाद सपस्य ~~वक्रा~~ मं व लभूति कः॥ नन्दन तीपमारया तं मांसेन प्रजुहोम्य॥
 आदि साक्षाः शिवः शक्तिः तदा शिवस्तथेश्वरः॥ कुडविद्या कला शिवा
 रागाः कारणा नैव च॥ पुनर्विद्या कति न्याहं